संकल्प के साथ संकीर्तन करें

स्वामी अखण्डानन्द

'मन्दिर में रहो' सत्संग
सिद्धयोग वैश्विक हॉल में सीधा वीडिओ प्रसारण
शनिवार, २ मई, २०२०

शनिवार, २ मई को 'मन्दिर में रहो' सत्संग' का केन्द्रण था, सिद्धयोग के अभ्यास—नामसंकीर्तन तथा ध्यान। इस सत्संग के सूत्रधार तथा शिक्षक, स्वामी अखण्डानन्द ने अपनी वार्ता का आरम्भ नामसंकीर्तन के शब्दों का अर्थ बताते हुए किया ताकि प्रतिभागी और अधिक जागरूकता व सांकल्पिकता के साथ संकीर्तन कर सकें। स्वामी जी ने कहा :

नमस्ते!

आज हम 'साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव हर शम्भो' की धुन गाएँगे।

इस नामसंकीर्तन को राग काफ़ी में संगीतबद्ध किया गया है जो प्रफुल्लता व हर्ष के गुणों का आवाहन करता है। यह नामसंकीर्तन भगवान शिव की स्तुति में है, जो सभी की परम आत्मा हैं। ध्रुवपद में हम 'साम्ब सदाशिव' कहकर भगवान का गुणगान करते हैं, अर्थात् वे 'सदाशिव', वे अनादि-अनन्त शिव जो सदैव हमारे अन्तर में विद्यमान हैं और जो 'साम्ब' हैं यानी जो सदा अपनी दिव्य रचनात्मक शक्ति, देवी 'अम्बा' के साथ एकात्म हैं। हम 'हर' के रूप में भगवान का आवाहन करते हैं यानी वे जो हमारे सच्चे स्वरूप पर आवरण डालने वाले अज्ञान को हर लेते हैं, जो हमारे सीमितता के भाव को विलीन कर देते हैं और हमारी स्वतन्त्रता को प्रकट करते हैं। साथ ही हम भगवान का गुणगान 'शम्भु' के रूप में करते हैं जो समस्त सुखों के दाता हैं।

इस प्रकार ध्रुवपद का अर्थ है :

देवी अम्बा के साथ एकात्म, हे साम्ब, हे अनादि-अनन्त शिव, हे सदाशिव!
अज्ञान को हरने वाले, हे हर,
और समस्त सुखों के दाता, हे शम्भु!

फिर पहले पद में हम भगवान के और भी नामों को गाते हैं :

हे गिरिजावर
हे गिरिजावर
हे गिरिजावर हर शम्भो।

हम भगवान को 'गिरिजावर' कहकर सम्बोधित करते हैं। 'गिरि' शब्द का अर्थ है, 'पर्वत' जो यहाँ हिमालय के सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है; हिमालय, जहाँ भगवान शिव का निवास-स्थान है। 'गिरिजावर' शब्द का सम्बन्ध भगवान शिव से है जो पर्वत-पुत्री, पार्वती के प्रिय वर हैं। देवी पार्वती, कोमल व पालनकारिणी दिव्य शक्ति हैं।

दूसरा पद इस प्रकार है :

हे करुणाकर
हे करुणाकर
हे करुणाकर हर शम्भो।

संस्कृत शब्द 'करुणा', भगवान शिव के परम दयालु, मृदुल, परवाह करने वाले और प्रेममय स्वभाव का द्योतक है। 'करुणाकर' शब्द, भगवान शिव का वर्णन, करुणा की साकार मूर्ति के रूप में तथा दैवी दया की वर्षा करने वाले के रूप में करता है; यह शब्द दर्शाता है कि भगवान को प्रत्येक प्राणी की असीम चिन्ता है, उन्हें हर किसीकी परवाह है व हर किसीसे अपार सहानुभूति है। 'करुणाकर' गाकर हम उन प्रभु का आवाहन करते हैं जो अहेतुक प्रेम व कृपा के रूप में हमारे हृदय में विद्यमान हैं। उन तरीक़ों को ज्ञात करना बहुत आवश्यक है जिनसे दूसरों के प्रति करुणा, सहानुभूति व दयालुता को अभिव्यक्त किया जा सके, विशेष रूप से उनके प्रति जिन्हें सम्बल की ज़रूरत है। विपत्ति के समय में, करुणा ताक़त प्रदान करती है व उसका विकास करती है। यह हमारी सच्ची मानवता को जगाती है।

तीसरा पद है :

हे मृत्युञ्जय सच्चित्सुखमय
हे करुणामय हर शम्भो ॥

'मृत्युञ्जय' यह नाम दो शब्दों से मिलकर बना है : 'मृत्यु' और 'जय'। इस प्रकार 'मृत्युञ्जय' भगवान शिव को, मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाले, अमर प्रभु के रूप में दर्शाता है। जब हमें अपनी सच्ची आत्मा—जो भौतिक देह तथा नित्य परिवर्तनशील संसार के परे है—का अभिज्ञान हो जाता है, तब हम मृत्यु पर विजय पा सकते हैं।

इस पद में भगवान शिव का एक और सुन्दर नाम है, 'सच्चित्सुखमय'—वे जो सत्, चित् व सुख हैं। 'सच्चित्सुखमय' उन ईश्वर का गुणगान करता है जिनका स्वरूप सत्, चित् व सुख है।

इस प्रकार इस नामसंकीर्तन का सम्पूर्ण अर्थ है :

देवी अम्बा के साथ एकात्म, हे साम्ब, हे अनादि-अनन्त शिव, हे सदाशिव!
अज्ञान को हरने वाले, हे हर,
और समस्त सुखों के दाता, हे शम्भु!
आप गिरिजावर हैं, पर्वत-पुत्री पार्वती के प्रिय वर हैं।
आप करुणाकर हैं, करुणा के मूर्तरूप हैं।
आप मृत्युञ्जय हैं, मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाले हैं।
सत्, चित् व सुख आपका सत्त्व है।

सिद्धयोग पथ पर श्रीगुरुमाई हमें सिखाती हैं कि हम जो संकल्प करते हैं, उनमें महान शक्ति होती है। मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप इस संकल्प के साथ संकीर्तन करें कि भगवान शिव के ये गुण—करुणा, सुख, अमरत्व, सत्, चैतन्यता और आनन्द—आपके हृदय में और सर्वत्र सभी लोगों के हृदय में पुष्पित-पल्लवित हों।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।